

प्रेस विज्ञप्ति

जामिया मिल्लिया इस्लामिया ने "कुरान एंड साइंस" पर तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का आयोजन किया, जिसमें भारत, ईरान, इंडोनेशिया और यूरोप के विद्वान एक साथ आए

नई दिल्ली, 29 जनवरी, 2026

जामिया मिल्लिया इस्लामिया (JMI) के इस्लामिक स्टडीज़ विभाग, विलायत फाउंडेशन और शहीद बेहेश्ती यूनिवर्सिटी, तेहरान, ईरान द्वारा संयुक्त रूप से 28 जनवरी से 30 जनवरी, 2026 तक आयोजित "कुरान और विज्ञान" पर तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन का उद्घाटन कल जेएमआई के वाइस चांसलर, प्रो. मज़हर आसिफ़ और रजिस्ट्रार प्रो. मोहम्मद महताब आलम रिज़वी ने विश्वविद्यालय के डॉ. एम. ए. अंसारी ऑडिटोरियम में दुनिया भर के विद्वानों के बीच किया।

तीसरे तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय सेमिनार के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए, जेएमआई के कुलपति, प्रो. आसिफ़ ने कहा, "मानव जाति की सच्ची सफलता कुरान को समझने, उस पर गहराई से विचार करने और उसकी शिक्षाओं का पालन करने में है। दुख की बात यह है कि कुरान, जो कभी जीवित क्रौमों के लिए एक परिवर्तनकारी शक्ति थी, जिसने नैतिक चरित्र को आकार दिया और पाप के खिलाफ ढाल का काम किया, आज सिर्फ़ मृतकों के लिए पढ़ी जाने वाली किताब बनकर रह गई है। आज की ज़रूरत है कि कुरान को एक बार फिर जीवन का मार्ग बनाया जाए- इसे समझ के साथ पढ़ा जाए, इसे दिल में उतारा जाए, इसे चरित्र में उतारा जाए, और इसे हमारे व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन की धड़कन बनाया जाए।" उन्होंने आगे कहा कि धर्म की सच्ची भावना यह सुनिश्चित करने में है कि कोई भी व्यक्ति शब्दों, व्यवहार या कार्यों से किसी को नुकसान न पहुंचाए।

इस अवसर पर मुख्य अतिथि रहे जेएमआई के रजिस्ट्रार, प्रो. रिज़वी ने अपने संबोधन में कहा कि कुरान की कई आयतें मानव का ध्यान वैज्ञानिक सच्चाइयों की ओर खींचती हैं- जैसे पानी का निर्माण, ब्रह्मांड की विशालता, मिट्टी से मानव जाति की उत्पत्ति, आसमान को संभालने वाली व्यवस्था, और दो समुद्रों के बीच की बाधा जो उनके पानी को मिलने से रोकती है। ये सभी संकेत इस बात की गवाही देते हैं कि कुरान न केवल मार्गदर्शन की किताब है, बल्कि यह मानवता को ब्रह्मांड को नियंत्रित करने वाले वैज्ञानिक सिद्धांतों की ओर भी निर्देशित करती है। अपने मुख्य वक्तव्य में, मौलाना आज़ाद नेशनल उर्दू यूनिवर्सिटी, हैदराबाद के पूर्व वाइस-चांसलर प्रोफेसर असलम परवेज़ ने कहा कि कुरान और सुन्नत हमें सिखाते हैं कि प्यार सिर्फ़ शब्दों या दावों की बात नहीं है, बल्कि यह एक ऐसी सच्चाई है जो कामों से ज़ाहिर होती है। इसी तरह, कुरान यह सिद्धांत बताता है कि अतिरिक्त धन अच्छाई के रास्ते में खर्च किया जाना चाहिए, ताकि इंसानियत को फायदा हो और समाज में संतुलन बना रहे।

सम्मेलन के डायरेक्टर, इस्लामिक स्टडीज़ डिपार्टमेंट के अध्यक्ष और ह्यूमैनिटीज़ एंड लैंग्वेजेज़ फैकल्टी के डीन प्रोफेसर इक़्तिदार मोहम्मद खान ने कहा कि कुरान इंसानियत को पूरे ब्रह्मांड में बिखरे संकेतों को समझदारी और सही बुद्धि से देखने और उनमें छिपी समझ को समझने के लिए आमंत्रित करता है, ताकि बौद्धिक और व्यावहारिक जीवन दोनों को बेहतर बनाया जा सके।

विशिष्ट अतिथि, प्रोफेसर अख्तरुल वासे ने कहा कि सच्चाई यह है कि कुरान और विज्ञान दोनों इंसानियत को परम सत्य के एक ही अंतिम स्रोत—अल्लाह सर्वशक्तिमान की ओर ले जाते हैं। कुरान सिद्धांत देता है, जबकि विज्ञान उन सिद्धांतों को समझने और उनकी व्याख्या करने के साधन प्रदान करता है।

स्वागत वक्तव्य देते हुए, इस्लामिक स्टडीज़ डिपार्टमेंट के पूर्व अध्यक्ष प्रोफेसर सैयद शाहिद अली ने राय दी कि इस्लामी सभ्यता के शुरुआती दौर से ही, कुरान ने लगातार ब्रह्मांड के अवलोकन, चिंतन, तर्क और गहन सोच को प्रोत्साहित किया है। पहली ही आयत इंसानियत को अपने रब के नाम पर पढ़ने का निर्देश देती है—यह दर्शाता है कि ज्ञान की खोज सिर्फ एक सांसारिक ज़रूरत नहीं है, बल्कि एक पवित्र कार्य और इबादत का एक रूप है।

विशिष्ट अतिथि, प्रो. डॉ. जमीलेह सआदत अलमोलहोदा (ईरान की पूर्व प्रथम महिला) ने इस बात पर जोर दिया कि युवाओं के लिए कुरान के साथ अपने रिश्ते को मज़बूत करना ज़रूरी है, क्योंकि यही एकमात्र रास्ता है जो बौद्धिक सुरक्षा और व्यावहारिक सफलता प्रदान करता है।

भारत में ईरान के राजदूत डॉ. मोहम्मद फथाली ने कहा कि कुरान को उसके अर्थ और संदेश को समझकर पढ़ना बहुत ज़रूरी है, क्योंकि कई आयतें स्पष्ट रूप से इंसानियत को चिंतन, मनन और कुरान की गहरी समझ तक पहुँचने के लिए मार्गदर्शन करती हैं। विशिष्ट अतिथि, प्रोफेसर अब्दुल मजीद हकीम इलाही, जो ईरान के सुप्रीम लीडर के प्रतिनिधि हैं, उन्होंने कहा कि आधुनिक दुनिया की जटिल वैज्ञानिक और सामाजिक चुनौतियाँ हमें इस बात का एहसास कराती हैं कि कुरान का मकसद इंसान की चेतना को जगाना और इंसानियत को ब्रह्मांड की रचना में छिपी हुई समझदारी के करीब लाना है।

विशिष्ट अतिथि, इंजीनियर मुस्तफा अब्बास (कुवैत) ने कहा कि कुरान इंसान के दिल और दिमाग को लगातार सोच-विचार, चिंतन और गहरी सोच में लगाए रखना चाहता है, ताकि ब्रह्मांड के रहस्यों को मज़बूत बुनियाद पर समझा जा सके।

सैयद कल्बे जवाद नकवी ने कहा कि विज्ञान को कुरान के अधीन नहीं किया जाना चाहिए; बल्कि, विज्ञान को कुरान की रोशनी में समझा जाना चाहिए, क्योंकि यही सही विद्वतापूर्ण दृष्टिकोण है।

कार्यक्रम की शुरुआत डॉ. मोहम्मद मुनव्वर कमाल द्वारा पवित्र कुरान के पाठ से हुई।

कार्यक्रम का संचालन इस्लामिक स्टडीज विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर श्री जुनैद हारिस और डॉ. मेहदी बाकिर ने किया।

धन्यवाद ज्ञापन इस्लामिक स्टडीज विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. मोहम्मद मुश्ताक ने प्रस्तुत किया।

समारोह में इस्लामिक स्टडीज विभाग के सभी फैकल्टी सदस्य, विभिन्न विभागों के अध्यक्ष और फैकल्टी सदस्य, भारत और विदेश से आए मेहमान, शोधार्थी और बड़ी संख्या में छात्र उपस्थित थे।

समापन सत्र 30 जनवरी, 2026 को सुबह 10:00 बजे कॉन्फ्रेंस हॉल, सेंटर फॉर इंफॉर्मेशन एंड टेक्नोलॉजी (CIT), जेएमआई में होना निर्धारित है।

प्रो. साइमा सईद
मुख्य जनसंपर्क अधिकारी